



eduresourceza.com



NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2017

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER II

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours

70 marks

These marking guidelines are prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom are required to attend a standardisation meeting to ensure that the guidelines are consistently interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines. It is also recognised that, without the benefit of attendance at a standardisation meeting, there may be different interpretations of the application of the marking guidelines.

भाग क

निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो पर पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए।

प्रश्न १

कविता

१.१ माता

१.१.१ "माता" शीर्षक के आधार पर माता का वर्णन कीजिए।

माता दूखी है। वह विधाता से पूछती है : तू मेरे दिल के बारे में क्या जानेगा। मैंने भगवान की मूर्ति को बड़े प्रेम से सजाया। उसे भगवान को मैंने लाचार होकर सौंप दिया।

१.१.२ निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में संक्षेप व्याख्या कीजिए।

"मुझसे मेरे पुनर्जन्म का बचपन खेल रहा है।

मेरे जी का टुकड़ा हँसकर मुझे ढकेल रहा है।"

माँ को बचपने के दिन याद आ रहे हैं। उसका बेटा हँस कर ढकेल रहा है। वह उन दिनों की याद कर रही है। वह जवान थी और उसका बच्चा उसके साथ साथ बढ़ रहा था। जिन सीड़ियों पर दोनों उतरते थे। वह अब हँसते हुए उपर फिर से रहा है।

१.१.३ "मैं इस परम ज्याति की पगली नम्र भार वाहक हूँ।" इस पंक्ति का अर्थ अपने शब्दों में समझाइए।

माता कहती है वह परमात्मा के दिए हुए दुखों को अपने सिर पर बोझ उरानेवाली है। वह लोगों के प्राण को लेनेवाली एक गरीबनी है। चाहे मेरा नाम हो या मैं बदनाम हो जाऊँ। यह मुझ व्याकुल स्त्री की कुरबानी का गाना है। मैं कोई योगिनी जो तपस्या करने बैठी हूँ।

१.२ सीता स्वयंवर

१.२.१ सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) "महि पाताल नाक जसु व्यापा। राम वरी सिय भंजेउ चापा॥
करहिं आरती पुर नर नारी। देहिं निछावरि वित्त विसरी॥"

पृथ्वी पाताल और स्वर्ग तीनों लोकों में यश फैल गया कि रामचन्द्रजी ने धनुष ताड़ दिया और सीता जी को वरण कर लिया। नगर के नर नारी आरती कर रहे हैं और अपनी पूँजी को भुलाकर निछावर कर रहे हैं।

(ख) "नाचहिं गावहिं विबुध बधूटीं। बार बार कुसुमांजलि छुटीं। जहँ तहँ विप्र वेद
धुनि करहीं। वंदी विरिदावलि उच्चरहीं॥"

देवताओं की स्त्रियाँ नाचती गाती हैं। बार बार हाथों से पुष्पों की अञ्जलियाँ छूट रही हैं। जहाँ तहाँ ब्राह्मण वेदध्वनि कर रहे हैं और भाटलोग विरूदावली बखान रहे हैं।

१.२.२ सीता स्वयंवर : सीता राम के स्वयंवर को अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

See attached notes

प्रश्न दो See attached notes

निम्नलिखित दो प्रश्नों में से किन्हीं एक के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए

२.१ कहानी : चिंतादेवी : बुंदेलखंड के एक बीहड़ स्थान में चिंतादेवी के मन्दिर की बड़ी मान्यता है ? बताओं क्यों ? कहानी के आधार पर अपने शब्दों में समझाइए ।

अथवा

२.२ कहानी : सत्ती :

- २.२.१ चिंतादेवी का मंदिर को वर्णन कीजिए ।
- २.२.२ रत्नसिंह के चरित्र का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ?
- २.२.३ अपिके विचार में बुंदेलखंड के लोग आज भी चिंतादेवी के मन्दिर में क्यों पूजा करने जाते हैं ?
- २.२.४ जब रत्नसिंह आँखें खुलीं तब क्या हुआ ?
- २.२.५ चिंता के पास क्या हुआ ।

प्रश्न तीन

निम्नलिखित नाटक मेल मिलाप में से किन्हीं एक के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए

३.१ निम्नलिखित पात्रों में से किन्हीं एक का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

३.१.१ मंगल सिंह

३.१.२ किशन सिंह

३.२ राधा कौन थी ?

३.३ किसके बीच पुरानी दश्मनी थी और बातों क्यों ?

३.४ 'इस तरह से हठ करना ठीक नहीं ।' यह किसने कहाँ और क्यों ?

३.५ किशन ने सारा भार अपने ऊपर क्यों ले लिया ?

३.६ क्या अन्त में मेल मिलाप हुआ या नहीं । अपने शब्दों में समझाइए ।

अथवा

३.७ मंगल सिंह : "जीवन में भूल सभी से होती है यदि घरके लोगों में ही मेल मिलाप न रह जाने की भूल हो जाए और समय रहते समझकर भूल सुधार ली जाए तो परिस्थिति कैसे समझल जाती है । इस आधार पर मेल मिलाप की कहानी का व्याख्या कीजिए । विस्तार पूर्वक समझाइए ।

प्रश्न ४

निम्नलिखित दो प्रश्नों में से किन्हीं एक के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए।

- ४.१ घीसू ने क्यों कह : “जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं” व्याख्य कीजिए?
चमारों का दशा गाँव में बहुत बुरी थी। इस में भयंकर व्यंग छिपा है। जिस समाज में रात दिन मेहनत करनेवालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी। और किसानों के मुकाबले में वे लोग जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे कहीं ज्यादा सम्पन्न थे। वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का हो जाना कोई अचरज की बात न थी।
- ४.२ घीसू और माधव का “विचित्र जीवन” का वर्णन कीजिए?
घर में मिट्टी के दो चार बर्तनों के सिवा कोई सम्पत्ति नहीं। फटे चीथड़ों से अपनी नग्नता को ढाँके हुए लिए जाते थे। संसार की चिन्ताओं से मुक्त। कर्ज से लदे हुए। गालियाँ भी खाते, मार भी खाते मगर कोइड भी नम्र नहीं।
- ४.३ क्या गाँव के लोगों ने इन के मदद किये ? उदाहरण द्वारा समझाइए।
- ४.४ कहानी के अन्त में क्या हुआ?
घीसू ने समझाया क्यों रोता है बेटा। खुश हो कि वह मायजाल से मुखत हो गई। जंजाल से छूट गई। दोनों खड़े होकर गाने लगे।
- ४.५ यह कहानी हृदय में क्या भावना उत्पन्न करते हैं। अपने शब्दों में चर्चा कीजिए।
कफन एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की कहानी है जो श्रम के प्रति आदमी में हतोत्साह पैदा करती है क्योंकि उस श्रम की कोई सार्थकता उसे नहीं दिखायी देती है। क्योंकि जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से बहुत-कुछ अच्छी नहीं थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा संपन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी।

अथवा

४.६ " घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम" : इस विचार पर " कफन"

कहानी अपने शब्दों में समझाइए।

घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम। माधव इतना कामचोर था कि आध घण्टे काम करता तो घण्टे भर चिलम पीता। इसलिए उन्हें कहीं मजदूरी नहीं मिलती। जब तक वह पैसे रहते दोनों इधर उधर मारे मारे फिरे। जब फाके की नौबत तो फिर लकड़ियों तोड़ते मजदूरी तलाश करते।

चमारों का दशा गाँव में बहुत बुरी थी। इस में भयंकर व्यंग छिपा है। जिस समाज में रात दिन मेहनत करनेवालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी। और किसानों के मुकाबले में वे लोग जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे कहीं ज्यादा सम्पन्न थे। वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का हो जाना कोई अचरज की बात न थी।

माधव की पत्नी का मृत्यु हो गई। उने पास कफन खरीड़ने के लिए पैसे नहीं थे। जो पैसे थे दोनों बाप बेटे मजे लेकर नशे से गाते और नाचने लगे।

घीसू जैसे गरीब मजदूर का जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण बन गया है वह हृदय हिलानेवाला है। विचार करने पर मालूम पड़ता है कि समाज इसके लिए कहीं तक जिम्मेदार है।

इसका प्रारंभ इस प्रकार होता है- झोंपड़े के द्वार पर बाप और बेटा दोनों एक बुझे हुए अलाव के सामने चुपचाप बैठे हुए हैं और अंदर बेटे की जवान बीवी बुधिया प्रसव वेदना से पछाड़ खा रही थी। रह-रहकर उसके मुँह से ऐसी दिल हिला देने वाली आवाज़ निकलती थी कि दोनों कलेजा थाम लेते थे। जाड़ों की रात थी, प्रकृति सन्नाटे में डूबी हुई, सारा गाँव अंधकार में लय हो गया था। जब निसंग भाव से कहता है कि वह बचेगी नहीं तो माधव चिढ़कर उत्तर देता है कि मरना है तो जल्दी ही क्यों नहीं मर जाती-देखकर भी वह क्या कर लेगा। लगता है जैसे कहानी के प्रारंभ में ही बड़े सांकेतिक ढंग से प्रेमचंद इशारा कर रहे हैं और भाव का अंधकार में लय हो जाना मानो पूँजीवादी व्यवस्था का ही प्रगाढ़ होता हुआ अंधेरा है जो सारे मानवीय मूल्यों, सद्भाव और आत्मीयता को रौंदता हुआ निर्मम भाव से बढ़ता जा रहा है। इस औरत ने घर को एक व्यवस्था दी थी, पिसाई करके या घास छिलकर वह इन दोनों बगैरतों का दोजख भरती रही है। और आज ये दोनों इंतजार में है कि वह मर जाये, तो आराम से सोयें। आकाशवृत्ति पर जिंदा रहने वाले बाप-बेटे के लिए भुने हुए आलुओं की कीमत उस मरती हुई औरत से ज्यादा है। उनमें कोई भी इस डर से उसे देखने नहीं जाना चाहता कि उसके जाने पर दूसरा आदमी सारे आलू खा जायेगा। हलक और तालू जल जाने की चिंता किये बिना जिस तेजी से वे गर्म आलू खा रहे हैं उससे उनकी मारक गरीबी का अनुमान सहज ही हो जाता है। यह विसंगति कहानी की संपूर्ण संरचना के साथ विडंबनात्मक ढंग से जुड़ी हुई है। घीसू को बीस साल पहले हुई ठाकुर की बारात याद आती है-चटनी, राइता, तीन तरह के सूखे साग, एक रसेदार तरकारी, दही, चटनी, मिठाई। अब क्या बताऊँ कि उस भोज में क्या स्वाद मिला।... लोगों ने ऐसा खाया, किसी से पानी न पिया गया।... यह वर्णन अपने ब्योरे में काफी आकर्षक ही नहीं बल्कि भोजन के प्रति पाठकीय संवेदना को धारदार बना देता है। इसके बाद प्रेमचंद लिखते हैं- और बुधिया अभी कराह रही थी। इस प्रकार ठाकुर की बारात का वर्णन अमानवीयता को ठोस बनाने में पूरी सहायता करता है।

कफन एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की कहानी है जो श्रम के प्रति आदमी में हतोत्साह पैदा करती है क्योंकि उस श्रम की कोई सार्थकता उसे नहीं दिखायी देती है। क्योंकि जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से बहुत-कुछ अच्छी नहीं थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा संपन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी।... फिर भी उसे तक्सीन तो थी ही कि अगर वह फटेहाल है तो कम से कम उसे किसानों की-सी जी-तोड़ मेहनत तो नहीं करनी पड़ती। उसकी सरलता और निरीहता से दूसरे लोग बेज़ा फायदा तो नहीं उठाते। बीस साल तक यह व्यवस्था आदमी को भर पेट भोजन के बिना रखती है इसलिए आवश्यक नहीं कि अपने परिवार के ही एक सदस्य के मरने-जीने से ज्यादा चिंता उन्हें अपने पेट भरने की होती है। औरत के मर जाने पर कफन का चंदा हाथ में आने पर उनकी नियत बदलने लगती है, हल्के से कफन की बात पर दोनों एकमत हो जाते हैं कि लाश उठते-उठते रात हो जायेगी। रात को कफन कौन देखता है? कफन लाश के साथ जल ही तो जाता है। और फिर उस हल्के कफन को लिये बिना ही ये लोग उस कफन के चन्दे के पैसे को शराब, पूड़ियों, चटनी, अचार और कलेजियों पर खर्च कर देते हैं। अपने भोजन की तृप्ति से ही दोनों बुधिया की सद्गति की कल्पना कर लेते हैं-हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है तो क्या उसे सुख नहीं मिलेगा। जरूर से जरूर मिलेगा। भगवान तुम अंतर्यामी हो। उसे बैकुण्ठ ले जाना। अपनी आत्मा की प्रसन्नता पहले जरूरी है, संसार और भगवान की प्रसन्नता की कोई जरूरत है भी तो बाद में।

अपनी उम्र के अनुरूप घीसू ज्यादा समझदार है। उसे मालूम है कि लोग कफन की व्यवस्था करेंगे-भले ही इस बार रूपया उनके हाथ में न आवे। नशे की हालत में माधव जब पत्नी के अथाह दुःख भोगने की सोचकर रोने लगता है तो घीसू उसे चुप कराता है-हमारे परंपरागत ज्ञान के सहारे कि मर कर वह मुक्त हो गयी है। और इस जंजाल से छूट गयी है। नशे में नाचते-गाते, उछलते-कूदते, सभी ओर से बेखबर और मदमस्त, वे वहीं गिर कर ढेर हो जाते हैं।

Total: 70 marks

रामायण
Sita Swayamvar
सीता स्वयंवर

शो : रघुबर उर जयमाल देखि देव बरिसहिं सुमन ।

सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रवि कुमुदगन ॥

अर्थ : श्रीरघुनाथजी के हृदयपर जयमाला देखकर देवता फूल बरसाने लगे । समस्त राजागण इस

प्रकार सकुचा गये मानो सूर्यको देखकर कुमुदों का समूह सिंकुड़ गया हो ।

पुर अरु व्योम बाजने बाजे । खल भए मलिन साधु सब राजे ॥

सुर किंनार नर नाग मुनिसा । जय जय जय कहि देहिं असीसा ॥

अर्थ : नगर और आकाश में बाजे बजने लगे । दुष्ट लोग उदास हो गये और सज्जन लोग सब प्रसन्न

हो गये । देवता, किंनर, मनुष्य, नाग और मुनिश्वर जय जयकार करके आशीर्वाद दे रहे हैं ।

नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटी । बर बर कुसुमांजलि छूटी ॥

जहँ तहँ बिप्र बेद धुनि करहीं । बंदी बिरिदावलि उच्चरही ॥

अर्थ : देवताओं की स्त्रियों नाचती गाती हैं । बार बार हाथों से पुष्पों की अञ्जलियाँ छूट रही हैं ।

जहाँ तहाँ ब्रह्मण वेदध्वनि कर रहे हैं और भाट लोग विरुदावली कुलकीर्ति बखान रहे हैं ।

महि पाताल नाक जसु ब्यापा । राम बरी सिय भंजेउ वापा ॥

करहिं आरती पुर नर नारी । देहिं निछावरि बित्त बिसारी ॥

अर्थ : पृथ्वी पाताल और स्वर्ग तीनों लोकों में यश फैल गया कि श्रीरामचन्द्रजी ने धनुष तोड़ दिया

और सीता जी को वरण कर लिया । नगर के नर नारी आरती कर रहे हैं और अपनी पूँजी हैसियत

खो भुलाकर सामर्थ्य से बहुत अधिक निछावर कर रहे हैं ।

सोहति सीय राम कै जोरी । छवि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी ॥

सखीं कहहिं प्रभु पद गहु सीता । करति न चरन परस अति भीता ॥

अर्थ : श्री सीता रामजी की जोड़ी ऐसी सुशोभित हो रही है मानो सुन्दरता और शृंगार रस एकत्र

हो गये हों । सखियाँ कह रही हैं सीते ,स्वामी के चरण छुओ किंतु सीता जी अत्यन्त भयभीत हुई

उनके चरण नहीं छतीं ।

मेल मिलाप (रुंकाकी)

प्रश्नोत्तर :-

प्रश्न I - रुंकाकी 'मेल मिलाप' के नाम की सार्थकता बताइए :-

उत्तर :- मेल मिलाप का नाम रुंकाकीकार ने उचित ही रखा है। इस रुंकाकी में बताया गया है कि किसान और मंगल चचेरे भाई हैं। आखिरी मन-हुराब के कारण दोनों में बोलचाल नहीं। किसान की बेटी लक्ष्मी की शादी पर मंगलसिंह शामिल नहीं होता है और न ही अपनी पहली राधा को शादी में जाने देता है। मंगलसिंह गाँव के लोगों रघुराज और दिव्दा से मिल कर शहर में लक्ष्मी नामकरण करा लेता है। धारना देकर उसने वास्ता उस कारवाने में आया लगाना देते हैं, जब उसने पास भी रुपये नहीं हैं। लक्ष्मी सीता की शादी के दिन तब होने वाली है और शादी की हड़ भी तैयारी नहीं है। ऐसे दुर्लभ के समय में मंगल का चचेरा भाई किसान सिंह उसकी मदद के लिए आता है और उसे मदद दिलाता है उस सीता की शादी खर्च करने को कहता और राधा और चन्दों को भी शादी के लिए सामान सपरीदने के लिए शहर चलाने को कहता है।

इसमें बताया है कि किस प्रकार दोनों भाई में पहले बन्ती नहीं थी और किस प्रकार दोनों में मेल हो गया। इसलिए रुंकाकीकार ने इसका नाम 'मेल मिलाप' ठीक ही रखा है। मेल-मिलाप ऐसा है इसमें अपने-पराए और घर के लोग निरुद्ध हो जाते हैं। इसलिए इस रुंकाकी का नाम सार्थक है। और रुंकाकीकार ने भी कहा कि मेलमिलाप में सहयोग से परिवार, गाँव और प्रांत, तथा देश की समृद्धि दीयी है।

"सब जगह बढ़ते चले गए तो उन दिन गाँव खाली बन जायेंगे।" वह सभी से मिल-जुल कर रहने वाला है। सभी वह सच्चा दोस्त भी कहता है कि "एक दूसरे के सहयोग से जिन्दगी है।" उसका गाँव में सम्मान है। यहाँ तक कि रघुराज सिंह जैसे धूर्त मक्कार लोग भी उससे डरते, बात करने से कतराते हैं। वह एक सुलभ व्यक्ति है। इस रंगमंच में जो भी उससे वाक्य करते हैं, वह सभी प्रभावित करने वाले हैं।

अंत में हम कह सकते हैं कि, गाँव का सच्चा हिरोई, अच्छा पति, अच्छा भाई, अच्छा देवर, अच्छा ग्रामीण और अच्छा मददकार है। वह अपनी भाई की इज्जत करता है और मंगलसिंह को कुलीन में पड़ा देरनकर उसका मन पसीज जाता है और अपने भाई के कर्त्तव्य से मंगलसिंह की मदद करने को तैयार हो जाता है और अपनी भतीजी की शादी (सती), स्वयं करने के लिए तैयार है। इस रंगमंच में उसने सहयोग कर कर जोर दिया है, इसमें भी वह मंगलसिंह को बहाला दे हिरो सहयोग के बिना जिन्दगी कैसे चला सकती है।

प्रश्न-3. मंगलसिंह का चरित्र चित्रण अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- मंगलसिंह गाँव का एक खाली पीला निलान है। वह पैदा होने के कारण उनका नाम प्यं मंडी है। वह पत्नी के सम्मान पर भी भाई की बेटी (लक्ष्मी) की शादी में नहीं जाता है वह दूसरों के पीछे चलने वाला है। रघुराज सिंह जैसे धूर्त भी उसे अपने पीछे लगा लेते हैं। वह दूरदर्शी मिलानसार नहीं है। इस रंगमंच में उसका चरित्र एक साधारण सा है। वह बहुत जिद्दी है पत्नी के और मिशन के बुलाने पर भी लक्ष्मी की शादी में नहीं जाता है। उसे अच्छा या बुरा सम्मान की पहचान नहीं है वह अधिक बुद्धिमान नहीं है। अपने दोस्त भी अच्छे नहीं हैं। धूर्त है रघुराज

प्रश्न:- मेल मिलाप संकेतों के आधार पर राधा का चरित्र चित्रण कीजिए:-

उत्तर:- राधा इस संकेतों की मुख्य पात्र हैं। एक अच्छी और समझदार औरत के जो भी गुण होने चाहिए। वे सब उसमें विद्यमान हैं।
 व्यनहार कुशल:- वह अपने पति को भर्षा नहीं लगनी की शादी में जाने के लिए सम्मति देती है।
 कर्तव्य:- वह अपने कर्तव्य से पीढ़े रहने वाली नहीं है। अपने सगे भाई के बीमार होते हुए भी वह अपने देवर की लड़की की शादी के लिए रुकती है, वह बहुत दूरदर्शी है उसे पता है कि रघुनाथसिंह अच्छा आदमी नहीं है। वह अपने पति को उससे पहले ही चौकन्ना करती है। वह बहुत ही सुलकी हुई औरत। मिल-जुल कर रहनी वाली औरत है, पति के न चाहते हुए भी वह अपने देवर रक्षित सिंह और उसकी पत्नी के साथ पूरा मिल-जुल न करती है उसे पता है कि यमुना सामाजिक प्राणी है। उसके लिए समाज में रहना किस प्रकार जरूरी है। मधुरभाषी है। इसलिए अंत में हम यह समते हैं कि इस संकेतों की सबसे प्रभावशाली पात्र राधा ही हैं। उसमें एक अच्छी औरत के सभी गुण विद्यमान हैं। और नारी के रूप में वह इस संकेतों में प्रधान स्थान रखती है, मुख्य पात्र है। वह बहुत ही बुद्धिमती औरत है।

प्रश्न:- मेल मिलाप संकेतों में किशनसिंह के चरित्र का वर्णन कीजिए:-

उत्तर:- मेल मिलाप संकेतों में किशनसिंह भी एक प्रभावित पात्र हैं। वह भी एक बहुत सज्जन, समझदार, मधुरभाषी दूरदर्शी व्यक्ति हैं। सब का आदर करने वाला और सभी गरीबों के साथ प्रेम से रहने वाला व्यक्ति हैं। गांव का मला सोचने वाला है, वह अपनी माँ को भी कहता है कि अगर हम-

सिंह जैसे जो अंत में उसे धोखा देते हैं। अंत में यह समझते हैं उसका चरित्र साधारण है वह किसी को भी प्रभावित नहीं करता है।

पंक्तियों के अर्थ स्पष्ट कीजिए -

1. "इसी प्रकार हम आगे बढ़ते चले गए तो एक दिन गाँव रुक बन जाणगे।"

यह नाम्य विशाल सिंह ने राधा (अपनी माँ) को कहा है जब वह उसके घर लड़की को शागुन देने आती है। विशाल गाँव का होलैंकी है इसलिए उसने कहा कि हम तसनी करते आगे बढ़ेंगे तो गाँव बहुत सुन्दर बन जाणगे।

2. "कि लोग आरंभ होते हुए भी ऊँचे झूँक चलते हैं।" इस पंक्ति को किसने किसने चले में कहा है।

यह पंक्ति विशाल ने अपनी माँ को (राधा) कही कि मंगल सिंह को रघुराज सिंह जैसे धूर्त लोगों से सावधान रहना चाहिए। वह मंगल सिंह को कहरवादि लोग समझाते हुए ना समझें क्यों बन जाते अर्थात् रघुराज सिंह जैसे इन्सान को मंगल सिंह अपना दोस्त क्यों बना रहा है।

3. "तुम गाँव में नाम पर बड़ा लगाते हो"

यह नाम्य विशाल सिंह ने कहा है जब रघुराज सिंह और हीरा पंडित में कहासुनी हो जाती है। वह रघुराज सिंह को कहता है कि तुम गाँव वालों के लिए एक कलंक और सभी गाँव वालों का नाम खराब कर रहे हो और इसलिए तुम गाँव छोड़ कर चलो जाओ।

4. मुसीबत के वक्त पर अगर आदमी आदमी का साथ न दे।

मंगल सिंह के कारणों में आग लगाने से मंगल सिंह बेचैन हैं उस समय विशाल ने उसे दिलासा देते हुए यह नाम्य कहा कि दुखीता में ही मुख्य, मुख्य की मदद करता है।

सती

कुंदेलखंड के एक बीहड़ स्थान में चिंतादेवी के मन्दिर की बड़ी मान्यता है। कहते हैं यहाँ आतादिष्टों पहले चिंतादेवी सती हुई थीं, पर अपने पति के मृत शरीर के साथ नहीं उसकी आत्मा के साथ।

चिंता यमुना नदी के तट पर बसे कालपी नगर के एक वीर कुंदेल की बेटी थी। उसकी माता बाव्यावस्था में ही स्वर्ग सिंघार चुकी थीं। पिता के साथ जंगलों में भटकना उसके लिये सामान्य था। पिता हर वक्त मातृभूमि के लिये संग्राम में रहते और चिंता जंगल में उनके लौटने की प्रतीक्षा करती। चिंता का बचपन गुड़ियों से खेलने की बजाय रेत के किले बनाने एवं रणनीति बनाने गुजरता। तेरह वर्ष की आयु में युद्ध में लड़ते हुए पिता के शहीद होने पर भी चिंता तनिक भर भी विचलित नहीं हुई। इसी उम्र में उसने कमर कस ली और अपने आपको मातृभूमि की रक्षा के लिये समर्पित कर दिया।

कुछ ही समय में समस्त प्रांत में चिंतादेवी की ध्याक जम गई। दुश्मनों के कदम उखड़ गए। तीरों और गोलियों के सामने निडर खड़े देखकर उसके सिपाहियों को भी उत्तेजना मिलती रहती थी।

कई योद्धा चिंतादेवी को अपना चाहते थे पर चिंतादेवी ने कभी किसी पर ध्यान न दिया। इन्हीं योद्धाओं में रत्नसिंह नाम का एक राजपूत युवक भी था। पर वह अन्य वीरों

की तरह अक्खड़, मुँहफट या चमंडी न था। वह जो भी करता झोंत भाव से। मन ही मन वह चिंता देवी को चाहता था।

एक बार युद्ध के दौरान रात के अंधेरे में चिंता देवी की गुप्त हत्या करने के उद्देश्य से शत्रुओं के तीन साहसी सिपाही चिंता देवी के खेम के पास आये। रत्नसिंह सोया न था। उसने अपनी जान पर खेलकर झकेले दी उसे युद्ध किया। इस युद्ध में वह पूरी तरह व्यायल होकर अचेत हो गया। सुबह जब चिंता देवी को पता चला तो वह रत्नसिंह की वीरता के कारण उससे प्रेम करने लगी। अचेत अवस्था में पड़े रत्नसिंह की जी जान से ही एक महीने सेवा की और उससे विवाह कर लिया।

सधुर मिलन की रात्रि समाचार आया कि शत्रु हमला करने वाले हैं। रत्नसिंह अपनी सेना के साथ तुरंत ही युद्ध के लिये चल पड़ा। पर इस बार उसका मन चिंता देवी में ही उलझा रहा।

शत्रु सेना रत्नसिंह की सेना से बहुत बड़ी थी। पर रत्नसिंह की सेना में जोश की कमी न थी। वह बहुत जोश से लड़े पर अपने सेनापति रत्नसिंह को युद्ध में नहीं पाया। रत्नसिंह की सेना बिजयी तो न हुई पर दुश्मनों के मुँह से भी वाह वाह निकली।

चिंता देवी को जब पता चला कि युद्ध में कोई भी न बचा तो सती होने के लिये उसने चिता तैयार करवाई। जैसे ही चिंता देवी सती होने के लिये चिता पर बैठी और आग लगाई रत्नसिंह दौड़े पर स्वार बहाँ आ पहुँचा। उसकी